SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कोविड 19 के दौर में ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियाँ

पिंकी रानी, शोधार्थी,
पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
पिंकी रानी, शोधार्थी,
पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/11/2020
Revised on : -----
Accepted on : 25/11/2020
Plagiarism : 04% on 19/11/2020

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 4%

Date: Thursday, November 19, 2020
Statistics: 77 words Plagiarized / 1818 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

dksfoM 19 ds nkSj esa xzkeh.k f'k{kk O;oLFkk dh pqukSfr;kj 'kks/k lkjka'k& fiNys lkS o"kksZa esa f'k{kk us tks rjDdh dh gS mlus ekuo lH;rk dks pgq¡eq[kh çxfr nh gSA ijarq oSf'od egkekjh dksfoM 19 us fo'o dh reke vFkZO;oLFkk ds LraHk tSls d`f"k] jkstxkj] lapkj] fpfdRlk vkfn dks çHkkfor fd;k gSA bu lcds lkFk dksfoM 19 us f'k{kk O;oLFkk dks Hkh xaHkhj :i ls çHkkfor fd;k gSA bl egkekjh ds nkSjku nqfu;k Hkj dh ljdkjsa f'k{kk O;oLFkk dks lqn`<+ djus gsrq ç;kljr gSA f'k{kk dks lqpk: :i ls fo|kfFkZ;ksa rd igq¡pkus ds fy, Hkkjr ljdkj

शोध सार

पिछले सौ वर्षों में शिक्षा ने जो तरक्की की है उसने मानव सभ्यता को चहुँमुखी प्रगति दी है। परंतु वैश्विक महामारी कोविड 19 ने विश्व की तमाम अर्थव्यवस्था के स्तंभ जैसे कृषि, रोजगार, संचार, चिकित्सा आदि को प्रभावित किया है। इन सबके साथ कोविड 19 ने शिक्षा व्यवस्था को भी गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इस महामारी के दौरान दुनिया भर की सरकारें शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु प्रयासरत है। शिक्षा को सुचारू रूप से विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए भारत सरकार की मानव संसाधन मंत्रालय कई प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रही है। इसके लिए मंत्रालय, विद्यालय एवं कॉलेजों को ई–लर्निंग जैसे मंचों का सहारा लेने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। इस महामारी के दौर में ई–लर्निंग एक बेहतर विकल्प है। क्योंकि ई–लर्निंग के द्वारा इस बीमारी से बचने के महत्वपूर्ण उपाय लोगों से भौतिक दूरी को बनाए रखने में मदद मिलती है। लेकिन ई–लर्निंग की अपनी अलग चुनौतियाँ हैं। ई–लर्निंग की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती में लोगों के पास संसाधन की उपलब्धता का सवाल है। ई–लर्निंग के लिए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के पास कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन, इंटरनेट आदि होना आवश्यक है। शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में इसका बेहद अभाव है। दूसरी चुनौती संसाधन की उपलब्धता के साथ उसके उपयोग का ज्ञान भी आवश्यक है। ई–लर्निंग के लिए अब तक जितने भी मंच उपलब्ध हैं, उसको लेकर अभी शिक्षक और छात्र इतने सहज नहीं हैं जितना वो सामान्य कक्षाओं में होते हैं। तीसरी चुनौती भाषा की भी है। इंटरनेट पर ज्यादातर संसाधन की उपलब्धता अंग्रेजी में है। ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे और शिक्षक दोनों ही अंग्रेजी से इतर हिंदी या अपने क्षेत्रीय भाषाओं पर बल देते है। ऐसी भाषाई समस्या के कारण क्षेत्रीय बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर मुहैया कराना एक चुनौती है। चौथी चुनौती लिंग

भेद को लेकर भी है। घरों में सीमित संसाधन के बीच जब बच्चों के प्राथमिकता की बात आती है तो हमेशा पुरुष बच्चों को प्राथमिकता दी जाती है। लड़कियों पर घर में रहते हुए पढ़ाई करना भी एक समस्या है, क्योंकि उन पर अन्य घरेलू कामों का दबाव भी बढ़ जाता है। इन सारी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए ही हम ग्रामीण क्षेत्रों में इस महामारी के दौरान की शिक्षा चुनौती से निबट सकते है।

मुख्य शब्द

कोविड 19, ई–लर्निंग, ग्रामीण क्षेत्र, शिक्षा, चुनौती।

कोविड 19 ने दुनिया भर में कई स्तरों पर अभूतपूर्व संकट खड़ा किया है। फिलहाल कई देशों में इस महामारी को नियंत्रित करने के लिए लॉकडाउन जारी है, जिससे कई गतिविधियों पर विराम लग गया है। अर्थव्यवस्था पूरी तरह से बंद हो चुकी है। छोटे उद्योगों से बड़े औद्योगिक कारखाने पूरी तरह ठप हो चुके हैं। तालाबंदी में आवागमन के साधन को भी निष्क्रिय कर दिया गया है। इन सबके साथ स्कूल–कॉलेज भी बंद हैं ताकि भौतिक दूरी को कायम रखा जा सके। देशभर में तालाबंदी के समय सभी शैक्षणिक गतिविधियों को शुरू करने के लिए ऑनलाइन माध्यम का सहारा लिया जा रहा है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा शैक्षणिक कार्यों के लिए अनेक एप या ऑनलाइन साधनों का सहारा लिया जा रहा है। Moocs, Diksha, Prabha, e-larning, e-pathshala आदि डिजिटल पढ़ाई हेतु मददगार साधन हैं। परंतु इन साधनों के साथ अनेक तरह की समस्याएं हैं। क्या सभी क्षेत्रों में डिजिटल साधनों का समान रूप से लाभ उठाया जा सकता है? ऑनलाइन शिक्षा में सुधार और बढ़ावा देने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने 'भारत पढ़े ऑनलाइन' जैसे अभियान की शुरूआत की है। इस अभियान का मकसद है कि ऑनलाइन शिक्षा को कैसे बेहतर बनाया जाय।

विगत वर्षों में पूरी दुनिया में ई–लर्निंग या ऑनलाइन शिक्षा का आकर्षण बढ़ा है। इसको लेकर कई विश्लेषक उत्साहित रहते हैं तो कुछ अब भी इसकी उपयोगिता को सीमित मानते हैं। हाल में अमेरिका के एक पोर्टल ने ऑनलाइन शिक्षा कार्यक्रम को लेकर वार्षिक रिपोर्ट जारी की जो विवादास्पद या संदेहजनक हैं। एक तरफ तो यह रिपोर्ट स्कूलों में ऑनलाइन शिक्षा के बेहतर विकल्प को दर्शाता है तो वहीं दूसरी ओर यह भी मानता है कि ई–लर्निंग प्रणाली में अभी कई प्रकार के निवेश करना शेष है, जो शिक्षा को काफी मंहगा बना देती है। हालांकि सभी विशेषज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि ई–लर्निंग ग्रामीण भारत व दूर–दराज के क्षेत्रों में कारगर है। ग्रामीण भारत में शिक्षकों की कमी, गरीबी, बुनियादी ढांचे की कमी, लोगों की पढ़ाई के प्रति दिलचस्पी की कमी, आम पाठ्यक्रम आदि प्रमुख कारण हैं, जिससे ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में विकास नहीं हो पा रहा परंतु ई–लर्निंग की सहायता से इसे काफी बेहतर किया जा सकता है।

उपर्युक्त कथन तभी सत्य साबित हो सकता है, जब भारत विकसित हो या फिर भारत में गरीबी, असमानता, बेरोजगारी, लिंगभेद आदि न हो। अर्थात् जब तक शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में समानता नहीं दिखेगी तब तक दोनों क्षेत्रों अपनी–अपनी चुनौतियां सामने खड़ी होगी।

भारत में लगभग तैतीस करोड़ आबादी स्कूल व कॉलेज के छात्र–छात्राओं की है जो अभी मौजूदा हालात में ई–लर्निंग के द्वारा शिक्षण कार्यक्रम में संलग्न है। ई–लर्निंग की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती लोगों के पास संसाधन की उपलब्धता का सवाल है। ई–लर्निंग के लिए शिक्षकों व छात्रों के पास कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन, बिजली, इंटरनेट आदि होना अत्यंत ही जरूरी है। भारत जैसे विकासशील देश में जहां 66 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है तथा गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, असमानता व्यापक रूप से फैला हुआ हो वहां ऑनलाइन शिक्षा खेल के समान प्रतीत होता है, परंतु तालाबंदी में शिक्षा के क्षेत्र में कुछ न होने से बेहतर है, कुछ तो हो, पर क्या ये कुछ तो सभी के पास समान रूप से पहुंच रहा है?

ई–लर्निंग के लिए बिजली उपकरणों के साथ–साथ इंटरनेट से जुड़ने के लिए बिजली तक पहुंच महत्वपूर्ण है। घरों में बिजली तक पहुंचाने वाली 'सौभाग्य योजना' से पता चला है कि भारत के लगभग 99.9 प्रतिशत घरों

में बिजली कनेक्शन है। परंतु बिजली की गुणवत्ता और हर घंटे उपलब्धता होने वाली बिजली की तस्वीरें कुछ और ही बयां करती है। मिशन अंत्योदय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा 2017–18 गांवों में कराए गए देशव्यापी सर्वेक्षण से पता चलता है कि भारत में 16 प्रतिशत घरों में रोजाना 1–8 घंटे बिजली मिलती है, 33 प्रतिशत घरों में 9–12 प्रतिशत तथा केवल 47 प्रतिशत घरों में 12 घंटे से अधिक बिजली प्राप्त होती है।[1] बिजली की गुणवत्ता एवं उपलब्धता ही ई–लर्निंग की सफलता का परिचय दे सकती है।

एन.एस.एस.ओ. के 2017–18 के एक सर्वे के अनुसार मात्र 23.8 प्रतिशत भारतीय परिवारों के पास इंटरनेट की सुविधा है। ग्रामीण परिवारों के पास इंटरनेट की पहुंच 14.9 प्रतिशत है; तो वहीं शहरी क्षेत्रों में भी दर 42 प्रतिशत तक का है।[2] चूंकि ऑनलाइन क्लास के लिए कम्प्यूटर ज्यादा सहयोगी होता है फिर भी अनेक लोग कम्प्यूटर के स्थान पर मोबाईल का प्रयोग करते हैं। 24 प्रतिशत भारतीयों के पास स्मार्टफोन है जबकि मात्र 11 प्रतिशत ही ऐसे लोग हैं जो डेस्कटॉप कम्प्यूटर, लैपटॉप, नोटबुक, टेबलेट आदि का प्रयोग करते हैं। डिजिटल डिवाइड केवल पुरूष या महिला या ग्रामीण और शहरी तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह अनेक क्षेत्रों में विषमता को बढ़ा रहा है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती संसाधन की उपलब्धता के साथ–साथ उसके उपयोग का ज्ञान भी आवश्यक है। ई–लर्निंग की सफलता शिक्षक व छात्रों के साथ–साथ माता–पिता की सक्षमता पर काफी निर्भर करता है। IAMAI के इंडिया इंटरनेट 2019 के रिपोर्ट के अनुसार मात्र 36 प्रतिशत भारतीय परिवार अर्थात् 385 मिलियन 12 साल से ऊपर के लोग इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। जिसमें 27 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के लोग तथा 51 प्रतिशत शहरी क्षेत्र के लोग शामिल हैं। 400 मिलियन से अधिक सब्सक्राईबर वाट्सअप चलाते है।[3]

वर्तमान में शिक्षक, छात्र व माता–पिता ऑनलाइन शिक्षण के साथ जुड़ने की कोशिश में लगे हैं, वो चाहे वीडियो इंटरेक्शन, ऑनलाइन थिएटर के लाइव टीवी प्रसारण, आडियो–वीडियों फार्मेट बनाना, फाइल भेजना आदि शैक्षणिक तकनीकों को सीखने के प्रयासरत हैं। एन.एस.एस.ओ. 2018 के अनुसार भारत की 15 वर्ष से अधिक आयु के लगभग 45 प्रतिशत लोग या तो निरक्षर हैं या उनकी पहुंच केवल प्राथमिक शिक्षा तक ही है। ग्रामीण क्षेत्रों में 15 वर्ष से अधिक उम्र के लगभग 70 प्रतिशत या तो निरक्षर हैं या फिर केवल मध्य विद्यालय तक की शिक्षा प्राप्त कर पाते हैं।[4] जिससे वे जानकारी के अभाव में अपने बच्चों को भी उचित क्षेत्र में सहयोग नहीं कर पाते हैं।

लॉकडाउन की वजह से बच्चों को घर में ही पढ़ाई करने में काफी मुश्किलें हो रही है, क्योंकि उनमें तकनीकी ज्ञान का अभाव होता है। खासकर ग्रामीण परिवेश के छात्र तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण ठीक ढंग से पढ़ाई नहीं कर पाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र के माता–पिता भी तकनीकी ज्ञान के अभाव में अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन नहीं कर पा रहे हैं।

तीसरी चुनौती भाषा है। ई–लर्निंग के लिए प्रमुख रूप से अंग्रजी भाषा का प्रयोग किया जाता है। जिससे हिंदी भाषी छात्रों को काफी मुश्किल होती है। विशेष रूप से ग्रामीण भारत में शिक्षा का औपचारिक माध्यम स्थानीय भाषाएं होती हैं। ये बोलियां और भाषाएं शिक्षा के संप्रेषण और शिक्षण पद्धति का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। परंतु मोबाईल फोन और इंटरनेट के अन्य माध्यम अधिकांशतः अंग्रेजी भाषा के अनुकूल होते हैं, जो गांवों में डिजिटल व्यवहार को प्रेरित नहीं करते हैं।[5] Moocs, youtube, Swayam Prabha आदि पर भी अच्छे कंटेंट अधिकांशतः अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध होते हैं, जिसका लाभ हिंदी भाषी छात्र नहीं उठा पाते हैं। अनेक अध्ययनों से यह पता चला है कि भारत की अधिकांश आबादी डिजिटल रूप से अशिक्षित है। डिजिटल व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली भाषा को पढ़ने, लिखने व समझने व संप्रेषित करने तथा नई तकनीकों के प्रति अज्ञानता ऑनलाइन की राह में बाधा है।

चौथी चुनौती लिंगभेद है। इंटरनेट एंड मोबाईल एसोशिएशन ऑफ इंडिया 2019 के अनुसार 67 प्रतिशत पुरूष इंटरनेट का प्रयोग करते हैं, जबकि महिलाओं के संदर्भ में यह दर मात्र 33 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह विषमता पुरूषों एवं महिलाओं में क्रमशः 72 प्रतिशत एवं 28 प्रतिशत है।[6] महिलाओं का कम इंटरनेट इस्तेमाल करना ग्रामीण आर्थिक एवं सामाजिक पिछड़ेपन को साबित करता है।

घरों में सीमित संसाधनों के बीच जब बच्चों की प्राथमिकता की बात आती है तो हमेशा पुरूष बच्चों को ही प्राथमिकता दी जाती है। ये हमारी पितृसत्तात्मक सोच को दर्शाते हैं। घर के कामों की जिम्मेदारी, परिवार की कम आय, जानकारी का अभाव महिलाओं को इंटरनेट के इस्तेमाल से दूर करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में पुरूष एवं महिलाओं के बीच का ये अंतर महिलाओं को ऑनलाइन क्लास से काफी दूर ले जाता है। विशेष रूप से, महिलाओं की शिक्षा का ये विकल्प सही नहीं ठहर पा रहा है।

निष्कर्ष

इन सभी प्रमुख चुनौतियों के बावजूद भी अत्यंत महत्वपूर्ण चुनौतियों में डिजिटल बुनियादी ढांचे को लेकर है। डिजिटल बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा पर्याप्त खर्च नहीं हो पा रहा है। 2020–21 में डिजिटल ई–लर्निंग के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा मंत्रालय) का बजट 2019–20 में 604 करोड़ रूपए से घटकर 469 करोड़ रूपए हो गया।[7] जिससे पता चलता है कि कोविड 19 महामारी में ई–लर्निंग को बढ़ावा देने के साथ–साथ राज्य तथा केन्द्र सरकार को इसके बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए पर्याप्त खर्च भी करना जरूरी है।

संदर्भ सूची

Foot Note

1. https://scroll.in/article/960939/indian-education-cant-go-online-only-8-of-homes-with-school-children-have-computer-with-net-link
2. https://thewire.in/education/coronavirus-lockdown-education-students/
3. https://www.cnbctv18.com/technology/digital-education-during-covid-19-lockdown-not-for-all-5785491.htm/amp
4. http://www.mospi.gov.in/sites/default/files/NSS75252E/KI_Education_75th_Final.pdf&ved=2ahUKEwiruKe2oZ3sAhXExjgGHYjRAMsQFjAAegQIARAB&usg=AOvVaw0jw9cJXD3kXupa6mQuga9g
5. https://www.localheading.com/editors-picks/how-meaningful-online-education-for-rural-india
6. https://www.google.com/search?q=internet+and+mobile+Association+of+India+2019&client=ms-android-oppo&sourceid=chrome-mobile&ie=UTF-8&inm=vs
7. https://www.indiabudget.gov.in/expenditure_budget.php

Website

1. https://www.localheading.com/editors-picks/how-meaningful-online-education-for-rural-india/
2. https://scroll.in/article/960939/indian-education-cant-go-online-only-8-of-homes-with-school-children-have-computer-with-net-link
3. https://www.financialexpress.com/hindi/budget/economic-survey-2020-rural-children-spend-more-on-books-stationary-and-uniform-than-urban-children/1841920/
4. https://hindi.newsclick.in/articles/Unequal%20Education%20System
5. https://indianexpress.com/article/opinion/columns/coronavirus-lockdown-education-children-going-back-to-a-new-school-6374612/
6. https://www.thehindubusinessline.com/opinion/is-e-learning-the-best-bet-during-lockdown/article31426331.ece
7. https://scroll.in/article/960939/indian-education-cant-go-online-only-8-of-homes-with-school-children-have-computer-with-net-link
8. http://www.mospi.gov.in/

****